गुरुकृपा

श्रीगुरु की कृपा के विषय पर शास्त्रों से उद्धरण

आदि शंकराचार्य की कृति 'विवेकचूडामणि' से एक श्लोक

मन्दमध्यमरूपापि वैराग्येण शमादिना।
प्रसादेन गुरोः सेयं प्रवृद्धा सूयते फलम्॥

भले ही मनुष्य में मुमुक्षुत्व अर्थात् मोक्ष की ललक मन्द या मध्यम रूप में हो, तो भी श्रीगुरु के कृपाप्रसाद तथा वैराग्य और मन की प्रशान्ति जैसे सद्गुणों से वह ललक बढ़कर फलीभूत होगी।

विवेकचूडामणि, श्लोक २८

© २०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।